P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

युसुफ अली
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षक प्रशिक्षण विभाग,
संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

किसी भी राष्ट्र की एकता इस बात पर निर्भर है कि राष्ट्र के सभी सदस्य भावनात्मक रूप से अपने को एक ही समुदाय का सदस्य अनुभव करते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, जिसमें न्यादर्श के रूप में जयपुर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय तथा गैर राजकीय विद्यालयों के 50–50 छात्र कुल 100 छात्रों का चयन किया गया है। शोध निष्कर्ष में पाया गया है कि राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम, पाठ्यसहगामी क्रियाएँ, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा इत्यादि राष्ट्रीय भावनात्मक एकता की स्थापना में सहायक सिद्ध हो सकती है।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय भावनात्मक एकता, अभिवृत्ति।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के नागरिकों में विविधताओं तथा विभिन्नताओं का होना स्वाभाविक ही है। सम्भवतः विश्व में कोई ऐसा राष्ट्र नहीं होगा, जहाँ के समस्त नागरिक एक जैसे हों। नागरिकों में जातीय, धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषाई या आर्थिक विभिन्नताओं का होना स्वाभाविक है। व्यवसाय, व्यापार, धर्म प्रचार या औपनिवेशवाद के फलस्वरूप विश्व के विभिन्न राष्ट्रों की जनसंख्याओं में पारस्परिक आदान–प्रदान हुआ है। जनसंख्याओं में आदान–प्रदान की इस प्रक्रिया के कारण एक ही राष्ट्र में अनेक धर्मों, अनेक भाषाओं या अनेक संस्कृतियों के व्यक्ति रहे हैं। भारत के सम्बन्ध में यह विविधता तथा विभिन्नता और भी अधिक दृष्टिगोचर होती है। जहाँ यहाँ पर अनेक धर्मों व जातियों के अनेक भाषाएँ बोलने वाले अनेक सांस्कृतिक, साम्प्रदायिक, व आर्थिक पृष्ठभूमि के व्यक्ति रहते हैं, वहीं यहाँ पर अनेक प्रदेश में नागरिक विभक्त हैं। सभी नागरिकों को अपने–अपने धर्म व जाति, भाषा, संस्कृति तथा प्रदेश से मोह होना मानव स्वभावगत ही है, परन्तु संकुचित मनोवृत्ति तथा निहित स्वार्थों के कारण यहाँ पारस्परिक कलह तथा दंगे होते रहते हैं। किसी भी राष्ट्र में ऐसी कलह, साम्प्रदायिकता, विभिन्नता तथा मनोमालिन्यता अत्यन्त घातक होते हैं। ये राष्ट्र की उन्नति को ध्वस्त कर सकते हैं। भारत जैसे राष्ट्र के लिए, जो विकास के पथ पर अग्रसित है, जातीयता, धार्मिकता, साम्प्रदायिकता, भाषा या प्रादेशिकता की संकुचित धारणा विशेष रूप से घातक सिद्ध हो सकती है। इससे राष्ट्रीय भावनात्मक एकता में बाधा उत्पन्न हो सकती है तथा राष्ट्र की स्वतन्त्रता व अखण्डता को बनाये रखने तथा सुख–समृद्धि में वृद्धि करने के लिए ये आवश्यक है कि राष्ट्रीय भावनात्मक एकता व समाकलन को प्रोत्साहित किया जाये। स्वतंत्रता प्राप्त करने के समय से यह महसूस होने लगा था कि भारत में राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के विकास की अत्यन्त आवश्यकता है। देश की विभिन्न रियासतों का भारतीय शासन में विलय राष्ट्रीय एकता के प्रयासों का शुभारम्भ था परन्तु साम्प्रदायिकता, भाषावाद और क्षेत्रीयता के कारण होने वाले दंगों तथा छोटे–छोटे निहित स्वार्थों के लिए बृहत् भारत के हितों को नज़र अन्दाज करने की प्रवृत्ति के कारण राष्ट्रीय भावनात्मक एकता आज की प्रमुख आवश्यकता है। संकुचित मनोवृत्ति तथा निहित स्वार्थकारी सभी विघटनात्मक प्रवृत्तियों को वांछनीय दिशा देकर राष्ट्रीय भावनात्मक एकीकरण में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, धार्मिक व नैतिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, सतत् शिक्षा

इत्यादि राष्ट्रीय भावनात्मक एकता की स्थापना में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित पूर्व में कुछ शोध कार्य किये गये है जिनका विवरण निम्नलिखित हैं–

अहमद, फुरकानुद्दीन ने (2018) में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का महत्व पर लेख लिखा। नरवर अटवाल ने (2018) में भारत में राष्ट्रीय एकता का क्या महत्व है? पर लेख लिखा। ब्रेट वेरकाडोस ने (2018) में राष्ट्र की शांति, स्वतंत्रता, सम्प्रभुता और अखण्डता की सुरक्षा में राष्ट्रीय एकता का क्या महत्व है? पर लेख लिखा। जेन टेलर ने (2017) में राष्ट्रीय एकीकरण और आधुनिक विश्व में इसका महत्व पर लेख लिखा। अल्वान ओंग जी ज़ियान ने (2017) में राष्ट्रीय एकता का महत्व और आधुनिकीकरण की भूमिका पर लेख लिखा। फोजियासलीम अलवी और अन्य ने (2015) में शिक्षित युवाओं में राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का अध्ययन किया।

उपर्युक्त संदर्भित शोध अध्ययनों से प्रेरित होकर शोधार्थी ने शोध विषय का चयन किया और यह जानने का प्रयास किया कि जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के प्रति क्या अभिवृत्ति है।

अध्ययन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द

भावनात्मक एकता

भावनात्मक एकता से आशय है कि एकता की वह विचारधारा जो वर्गों के मतभेदों से उपर उठी हुई हो। विभिन्न धर्मों, जातियों, एवं भाषा–भाषियों को भावनात्मक रूप से एकता के सूत्र में बाँध दे। पं. नेहरू के शब्दों में ''भावनात्मक एकता से मेरा अभिप्राय अपने मस्तिष्क और हृदय के समन्वय से है। इसमें अलगाव की प्रवृत्तियों का दमन सम्मिलित है।

के.जी. सैय्यदन के अनुसार ''भावनात्मक एकता का अर्थ विभिन्नताओं को समाप्त करना नहीं है वरन् राष्ट्रीय एकता तथा मौलिक निष्ठाओं की अधिक विस्तृत व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्तियों को विभिन्न होने तथा अपनी विभिन्नताओं को सतर्कता तथा निर्भयता से व्यक्त करने का अधिकार है।''

विनोबा भावे के अनुसार–''यह भावात्मक एकता, भाईचारे और राष्ट्र प्रेम की वह दृढ़ भावना है जो एक देश के सभी निवासियों को अपनी व्यक्तिगत क्षेत्रीय, धार्मिक और भाषाई विभिन्नताओं को भुलाने में सहायता देती है।

उपरोक्त परिभाषाओं के अनुसार भावात्मक एकता एक भावना है, एक प्रेरणा है, एक योजक शक्ति है जो एक निश्चित भौगोलिक सीमा में रहने वाले विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय, और भाषा–भाषी लोगों को एकता के सूत्र में आबद्ध करने का कार्य करती है। उनके अन्दर अपने राष्ट्र के प्रति असीम प्रेम, आज्ञापालन, कर्तव्यपरायणता और अनुशासन के भाव पैदा करती है और इस बात की प्रेरणा देती है कि वे सब आपस में मिलकर रहे और राष्ट्र की सुरक्षा एवं उन्नति के लिए सदैव प्रयत्नशील रहें।

अभिवृत्ति

अभिवृत्ति एक प्राणी की किसी विषय–वस्तु या व्यक्ति के प्रति एक विशेष अर्जित, अनुभवबद्ध तथा स्थिरीकृत संवेगात्मक प्रवृत्ति है।

थर्स्टन के अनुसार– ''अभिवृत्ति किसी एक मनोवैज्ञानिक विषय के प्रति धनात्मक अथवा नकारात्मक भाव की मात्रा व्यक्त करती है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये–

1. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से सामाजिक एकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से सांस्कृतिक एकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से भाषीय एकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से राजनीतिक एकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से क्षेत्रीय एकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से सामाजिक एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी जाती है।
2. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से सांस्कृतिक एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी जाती है।
3. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से भाषायी एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी जाती है।
4. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से राजनीतिक एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी जाती है।
5. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से क्षेत्रीय एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी जाती है।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरण ''राष्ट्रीय भावनात्मक एकता मापनी'' को प्रयुक्त किया गया है। इस मापनी में पाँच आयाम यथा–सामाजिक एकता, सांस्कृतिक एकता, भाषायी एकता, राजनीतिक एकता एवं क्षेत्रीय एकता से संबंधित कुल 60 कथन है।

सांख्यिकी

संकलित दत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत को सांख्यिकी के रूप में उपयोग किया गया।

न्यादर्श

अध्ययन हेतु जयपुर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के तथा निजी विद्यालयों से 50–50 छात्र कुल 100 छात्रों का न्यादर्श के रूप में उद्देश्य निष्ठ सुविधाजनक तकनीक से चयन किया गया है।

तथ्यात्मक विश्लेषण

जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के प्रति अभिवृत्ति का आंकलन किया गया।

सारणी संख्या–1

जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के प्रति अभिवृत्ति का आयामवार विवरण–

(प्रतिशत में)

क्र.सं.	आयाम	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
1	सामाजिक एकता	63.89	29.18	4.12	2.81	0.00
2	सांस्कृतिक एकता	49.76	41.87	2.84	5.53	0.00
3	भाषायी एकता	56.60	25.95	11.60	5.85	0.00
4	राजनैतिक एकता	46.25	37.91	12.58	3.26	0.00
5	क्षेत्रीय एकता	58.52	34.98	3.76	2.74	0.00

जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से सामाजिक एकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

प्रस्तुत सारणी संख्या 1 का सिंहावलोकन करने से दृष्टिगत होता है कि जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों ने सारणी के प्रथम आयाम जो कि राष्ट्रीय भावनात्मक एकता की शिक्षा से सामाजिक एकता के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित है। इस पर 63.89 प्रतिशत छात्रों ने पूर्ण सहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। इसी प्रकार 29.18 प्रतिशत छात्रों ने सहमत के रूप में, 4.12 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चित रूप से तथा 2.81 प्रतिशत छात्रों ने असहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। किसी भी छात्र ने पूर्ण असहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित नहीं की है।

जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से सांस्कृतिक एकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

प्रस्तुत सारणी संख्या 1 का सिंहावलोकन करने से दृष्टिगत होता है कि जयपुर शहर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों ने सारणी के द्वितीय आयाम जो कि राष्ट्रीय भावनात्मक एकता की शिक्षा से सांस्कृतिक एकता के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित है। इस पर 49.76 प्रतिशत छात्रों ने पूर्ण सहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। इसी प्रकार 41.87 प्रतिशत छात्रों ने सहमत के रूप, 2.84 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चित रूप से तथा 5.53 प्रतिशत छात्रों ने असहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। किसी भी छात्र ने पूर्ण असहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित नहीं की है।

जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से भाषायी एकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

उपर्युक्त सारणी संख्या 1 का सिंहावलोकन करने से दृष्टिगत होता है कि जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों ने सारणी के तृतीय आयाम जो कि राष्ट्रीय भावनात्मक एकता की शिक्षा से भाषीय एकता के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित है। इस पर 56.60 प्रतिशत छात्रों ने पूर्ण सहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। इसी प्रकार 25.95 प्रतिशत छात्रों ने सहमत के रूप में, 11.60 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चित रूप से तथा 5.85 प्रतिशत छात्रों ने असहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। किसी भी छात्र ने पूर्ण असहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित नहीं की है।

जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से राजनीतिक एकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

उपर्युक्त सारणी संख्या 1 का सिंहावलोकन करने से दृष्टिगत होता है कि जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में सारणी के चतुर्थ आयाम जो कि राष्ट्रीय भावनात्मक एकता की शिक्षा से राजनैतिक एकता के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित है। इस पर 46.25 प्रतिशत छात्रों ने पूर्ण सहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। इसी प्रकार 37.91 प्रतिशत छात्रों ने सहमत के रूप में, 12.58 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चित रूप से तथा 3.26 प्रतिशत छात्रों ने असहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। किसी भी छात्र ने पूर्ण असहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित नहीं की है।

जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से क्षेत्रीय एकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

उपर्युक्त सारणी संख्या 1 का सिंहावलोकन करने से दृष्टिगत होता है कि जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में सारणी के पंचम आयाम जो कि राष्ट्रीय भावनात्मक एकता की शिक्षा से क्षेत्रीय एकता के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित है। इस पर 58.52 प्रतिशत छात्रों ने पूर्ण सहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। इसी प्रकार 34.98 प्रतिशत छात्रों ने सहमत के रूप में, 3.76 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चित रूप से तथा 2.74 प्रतिशत छात्रों ने असहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। किसी भी छात्र ने पूर्ण असहमत के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित नहीं की है।

परिकल्पनाओं का सत्यापन

1. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से सामाजिक एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी जाती है।

   जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से सामाजिक एकता के प्रति अभिवृत्ति का मापन करने पर ज्ञात होता है कि छात्रों ने अभिवृत्ति मापनी में अलग–अलग विकल्पों का चयन किया है परन्तु पूर्ण सहमत विकल्प के रूप में सर्वाधिक छात्रों की अभिवृत्ति पाई गई है। सारणी एक का अध्ययन करने पर पाया गया है कि छात्रों ने पाँचों विकल्पों में से शुरू के चार विकल्पों के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। अतः यह ज्ञात होता है कि छात्रों में सामाजिक एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई जाती है। इससे प्रस्तुत अध्ययन की उपर्युक्त प्रथम परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

2. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से सांस्कृतिक एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी जाती है।

   जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से सांस्कृतिक एकता के प्रति अभिवृत्ति का मापन करने पर ज्ञात होता है कि छात्रों ने अभिवृत्ति मापनी में अलग–अलग विकल्पों का चयन किया है परन्तु पूर्ण सहमत विकल्प के रूप में सर्वाधिक छात्रों की अभिवृत्ति पाई गई है। सारणी एक का अध्ययन करने पर पाया गया है कि छात्रों ने पाँचों विकल्पों में से शुरू के चार विकल्पों के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। अतः यह ज्ञात होता है कि छात्रों में सांस्कृतिक एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई जाती है। इससे प्रस्तुत अध्ययन की उपर्युक्त द्वितीय परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

3 जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से भाषायी एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी जाती है।

   जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से भाषायी एकता के प्रति अभिवृत्ति का मापन करने पर ज्ञात होता है कि छात्रों ने अभिवृत्ति मापनी में अलग–अलग विकल्पों का चयन किया है परन्तु पूर्ण सहमत विकल्प के रूप में सर्वाधिक छात्रों की अभिवृत्ति पाई गई है। सारणी एक का अध्ययन करने पर पाया गया है कि छात्रों ने पाँचों विकल्पों में से शुरू के चार विकल्पों के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। अतः यह ज्ञात होता है कि छात्रों में भाषायी एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई जाती है। इससे प्रस्तुत अध्ययन की उपर्युक्त तृतीय परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

4. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से राजनैतिक एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी जाती है।

   जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से राजनैतिक एकता के प्रति अभिवृत्ति का मापन करने पर ज्ञात होता है कि छात्रों ने अभिवृत्ति मापनी में अलग–अलग विकल्पों का चयन किया है परन्तु पूर्ण सहमत विकल्प के रूप में सर्वाधिक छात्रों की अभिवृत्ति पाई गई है। सारणी एक का अध्ययन करने पर पाया गया है कि छात्रों ने पाँचों विकल्पों में से शुरू के चार विकल्पों के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। अतः यह ज्ञात होता है कि छात्रों में राजनैतिक एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई जाती है। इससे प्रस्तुत अध्ययन की उपर्युक्त चतुर्थ परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

5. जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से क्षेत्रीय एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी जाती है।

   जयपुर शहर के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की राष्ट्रीय भावनात्मक एकता से क्षेत्रीय एकता के प्रति अभिवृत्ति का मापन करने पर ज्ञात होता है कि छात्रों ने अभिवृत्ति मापनी में अलग–अलग विकल्पों का चयन किया है परन्तु पूर्ण सहमत विकल्प के रूप में सर्वाधिक छात्रों की अभिवृत्ति पाई गई है। सारणी एक का अध्ययन करने पर पाया गया है कि छात्रों ने पाँचों विकल्पों में से शुरू के चार विकल्पों के रूप में अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। अतः यह ज्ञात होता है कि छात्रों में क्षेत्रीय एकता के विकास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई जाती है। इससे प्रस्तुत अध्ययन की उपर्युक्त पंचम परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय भावनात्मक एकता का अर्थ विभिन्न विभेदक तत्वों को समाप्त करना नहीं है। राष्ट्रीय भावनात्मक एकता का तात्पर्य राष्ट्र की विविध इकाईयों के एक साथ मिलजुल कर सौहार्द्र पूर्ण ढ़ंग से राष्ट्र हित में कार्य करना है। साम्प्रदायिकता, जातीयता, क्षेत्रीयता, भाषायी उन्मादों से अलग हटकर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से कार्य करना ही राष्ट्रीय भावनात्मक एकता है। राष्ट्रीय एकता मोतियों की माला के समान है। जो विभिन्न मानकों को एक साथ बांध कर रखती है। राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, धार्मिक व नैतिक शिक्षा प्रौढ़ शिक्षा, सतत् शिक्षा, इत्यादि राष्ट्रीय भावनात्मक एकता की स्थापना में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

गुप्ता, एस. पी. (2001) 'भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ', शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद

कबीर, हुमायूँ– स्वतंत्र भारत में शिक्षा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

सैयदन, के. जी. – शिक्षा की पुनर्रचना, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली

मुखर्जी, आर. के. (1954) ''नेशनलिज्म इन हिन्दू कल्चर'' एस. चन्द एण्ड कम्पनी, दिल्ली

गिलफर्ड जे. पी., ''फण्डामेन्टल स्टेटिक्स इन साइकॉलॉजी एण्ड एजूकेशन, तृतीय संस्करण, मैग्रोहिल, न्यू दिल्ली

गैरिट ई. हैनरी– ''शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय के प्रयोग'' लॉयल बुक डिपो, लुधियाना

Fauzia Saleem Alvie & others- 'Strengthening National Integration among Educated Youth', Journal of Contemparary Studies, Vol. IV, No. 1, 2015 pp-31-41.

Websites

http://www.thestar.com.my/news/education/2017/12/31/importance-of-national-unit-and-the-role-of-moderation-importance-of-national-unity-and-the-role-of

http://www.quora.com/what-is-importance-of-national-unity-in-the-protection-of-peace-independene-sovereignty-and-integrity-of-a-nation

http://www.quora.com/what-is-importance-of-national-integration-in-india?

http://m.theindependentbd.com//arcprint/details/158159/2018-07-17

https://www.affordable-papers.net/national-integration-importance-modern-world